गांधी जी की पत्रकारिता का महत्व

- डॉ. गुलशन गुप्ता

सहायक प्रोफेसर, MAIMS

गांधी जी का जीवन आदर्शों और कठिन व्रतों के सिद्धांतों पर कसा था | देश की तात्कालिक समस्याओं को अपने पत्रों के माध्यम से देशवासियों के सामने रखना और न केवल संभ्रांत वर्ग बल्कि देश की आम जनता को भी सम्बोधित करना उनके पत्रों की विशेषता है | अपने पत्राचार के सहारे वे सामान्य जन को अपनी बात सरल तरीके से पहुँचाने में सक्षम हो पाते थे और राष्ट्र भावना का संदेश भी प्रचारित प्रसारित कर पाते थे | ऐसे बहुत कम नायक हुए हैं जिन्होंने राष्ट्र को सांस्कृतिक रूप से एक करने की कवायद की है | आधुनिक भारत के इतिहास में महात्मा गांधी ऐसे ही एक व्यक्तित्व हुए हैं |

महात्मा गांधी ने 1909 में लिखी अपनी पहली और सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक 'हिन्द स्वराज' भी एक सम्पादक और पाठक के बीच प्रश्नोत्तर के कर्म को स्थापित करते संवाद प्रवाह के रूप में ही लिखी थी | उनकी एक सर्वश्रेष्ठ विशिष्टता यह थी कि वे संदेश के सफल प्रवाहक थे और अपने किसी भी दर्शन या राय को कुशलता पूर्वक व्यक्त करने से पहले स्वयं उस पर अमल करते थे | अपने विचारों को व्यक्तिगत जीवन में अपनाते हुए वे स्वयं का उदहारण समाज के समक्ष प्रस्तुत करते थे |

गांधी जी में शब्दों का मर्म और समाज की नब्ज़ पहचानने की विशेष क्षमता थी | इसका प्रभाव हमें उनके द्वारा संचालित आंदोलनों के प्रयोगों में दीखता है | आज डेढ़ सौ सालों के बाद भी उनकी वह स्पष्ट सोच और दर्शन समान रूप से प्रासंगिक है जिसमें वे कुशल संचार को किसी भी अन्य माध्यम की तुलना में सामान्य जन तक पहुँचने का सबसे उत्कृष्ट माध्यम मानते थे | इसीलिए उन्होंने समय-समय पर आवश्यकता के अनुसार अलग-अलग समाचार-पत्र निकाले | जब आधुनिक जन संचार उपकरण उपलब्ध नहीं थे तब भी उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में 1903 में 'द इंडियन ओपिनियन' अख़बार निकाला | भारत हो चाहें दक्षिण अफ्रीका उन्हें हमेशा जन समर्थन मिला क्यूंकि उनमें अभिव्यक्ति का कौशल छिपा था और अभिव्यक्ति का यह कौशल तब और अधिक प्रभावी होता था जब यह उनके पत्रों में प्रकट होता था | दक्षिण अफ्रीका में रहते समय अखबार 'इंडियन ओपिनियन' में गांधी जी ने रंगभेद समेत कई ऐसे मुद्दों को प्रकाशित किया जिन पर बाकी सभी चुप्पी साधे रहते थे |

गांधीजी की लगभग 50 वर्षों की पत्रकारिता में गांधी और उनकी पत्रकारिता दोनों विपरीत परिस्थितियों में भी दृढ संकल्प के साथ खड़े रहे थे | गांधी जी ने अपनी पत्रकारिता को इतना निर्भीक और सत्यवादी रखा था कि अफ़्रीकी सत्ता ने उन्हें 1906 में जोहान्सबर्ग में गिरफ्तार कर जेल में बंद कर दिया था | यह पहली बार

था जब गांधी जी को जेल जाना पड़ा था | किन्तु पत्रकारिता को निर्भीक रहना चाहिए इसका उदहारण प्रस्तुत करते हुए जेल में भी उन्होंने अपने लेखन को जारी रखा |

आज का युग व्यापार का युग है, छपाई आदि तकनीकें सतत और अधिक महंगी होती जा रही है | जिसके लिए बड़ी पूँजी की आवश्यकता होती है | गांधी समाचार पत्रों में विज्ञापनों के खिलाफ थे | एक प्रकार से उनका मानना था कि समाचार पत्रों में देश-समाज से सम्बन्धित खबरों की छपाई होनी चाहिए ना कि समाचार पत्रों के माध्यम से नोटों की छपाई की जाये | पत्रकारिता को चलायमान रखने में गांधी के समक्ष एक समय ऐसा आया जब उन्हें 'इंडियन ओपिनियन' अखबार निकालने के लिए 1200 रूपये प्रतिमाह अपनी जेब से निवेश करने पड़े और यह खर्चा बढ़ते-बढ़ते कुल मिलाकर 26000 रूपये के नुकसान तक जा पहुंचा | फिर भी गांधी ने अखबार में प्रकाशित होने वाले सभी विज्ञापनों पर रोक लगा दी ताकि वे अखबारों में अपने विचारों और पाठकों की राय को अधिक स्थान दे सकें |

गांधी जी को अंग्रेजों का अखबार निकालने का शौक नहीं था | वे कहते थे कि मेरा पाठक भारत का किसान और मजदूर है जो मुझ से अपनी ही भाषा में पत्र लिखकर बात भी करता है | इसीलिए गांधी ने हिन्दुस्तानी और गुजराती में अख़बार निकाले | देश के अंतिम जन से जुड़ना गांधी को पत्रकारिता का सबसे उत्तम पहलू मालूम होता था | और यही एक कारण है कि गांधी की पत्रकारिता सत्य आधारित और अभय लेखन से सजी होती थी | उन्हें सत्ता का डर और निजी लाभ की चिंता ने अपने सत्य के प्रयोगों से डिगने नहीं दिया |

गांधी जी के लिए अखबार से अधिक पाठक मूल्यवान था | इसलिए वे अखबार की आर्थिक दशा के लिए नहीं बल्कि पाठक की मनोदशा के लिए लिखते थे | यह भाव उनके पत्रों से लेकर पत्रकारिता तक में सदैव विद्यमान रहा है | गांधी की लेखनी ने समाज जागरण का वास्तविक कार्य किया है | ऐसा कहना इस दृष्टि से उचित है कि गांधी जी चाहें वे अखबार के लिए लिख रहे हों या किसी पत्र का उत्तर दे रहे हों वे अपने पाठकों से उनके दुर्गुणों की चर्चा और उनकी बुराइयों का ज़िक्र सहज भाव से कर देते थे | समाज में फैली अनेकों कुरीतियों और समाज जागरण से सम्बन्धित अनेक पहलुओं पर सतत लेखन करने में उन्हें किसी सामाजिक बहिष्कार और द्वेष का भय नहीं रहता था | इस सम्बन्ध में गांधी जी ने कहा था- 'अपने अखबार या पत्रों में मैंने एक भी शब्द बिना विचारे, बिना तौले लिखा हो या किसी को केवल खुश करने के लिए लिखा हो अथवा जान-बूझकर अतिश्योक्ति की हो ऐसा मुझे याद नहीं पड़ता' |

समाज को प्रभावित करने वाली खबरों के साथ-साथ गांधी जी के लिए पाठकों के पत्र भी समान रूप से महत्व रखते थे क्यूंकि पाठकों के यह पत्र एक प्रकार से समाज के प्रतिनिधियों की राय प्रकट करते थे | इसीलिए गांधी उन्हें पूरे सम्मान भाव से अपने समाचार पत्रों में यथोचित स्थान देते थे, साथ ही उनका उत्तर भी

सम्बन्धित पाठक को अवश्य देते थे | इंडियन ओपिनियन, हरिजन, यंग इंडिया, दैनिक नवजीवन और हरिजनसेवक जैसे समाचार पत्रों के माध्यम से गांधी जी ने पाठकों के कटु प्रश्नों का भी सहज उत्तर देना अबाध्य रूप से जारी रखा | आज ऐसे कई अवसर आते हैं जब पत्रकारिता में पत्र अपनी भाषा शैली तक खो बैठेते हैं ऐसे में हमें गांधी की कलम से विनम्रता का भाव सीखने की आवश्यकता है |

एक स्थान पर गांधी ने प्रेस की स्वतंत्रता के विषय में कहा कि कलम की निरंकुशता खतरनाक हो सकती है किन्तु उस पर व्यवस्था का अंकुश और भी अधिक खतरनाक है | गांधी जी ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि जिस प्रकार निरंकुश पानी का प्रवाह गांव के गांव डुबो देता है उसी प्रकार निरंकुश कलम का प्रवाह भी नाश की सृष्टि करता है और यदि वह अंकुश बाहर से आता है तो वह और अधिक विषैला सिद्ध होता है | अत: इस सन्दर्भ में अपने द्वारा लागू अंकुश ही लाभदायक हो सकता है | इसीलिए गांधी जी ख़बरों के स्थान पर पाठकों के विचारों और पत्रों को समाचार पत्रों में समान रूप से स्थान देते थे | क्यूंकि समाज की बात समाज के प्रतिनिधियों द्वारा कही जा रही थी जिसमें पक्षपात नामक दुर्गुण कम था | और इस पर कोई अंकुश भी प्रभावी नहीं होता है |

पत्र लेखन से ही गांधीजी की पत्रकारिता लेखन की भी शुरुआत हुई | गांधी ने पत्र को एकतरफा माध्यम नहीं माना | उन्होंने सम्पादक और पाठक के मध्य परस्पर सम्वाद की परम्परा का पालन किया था | आज इस सम्वाद की परम्परा का आभाव होता जा रहा है | आज की पत्रकारिता से जब 'सम्पादक के नाम चिट्ठी' जैसे महत्वपूर्ण स्तंभों का लोप हो गया है उसमें गांधी का कृतित्व प्रेरणाकारी लगता है | सम्पादक और पाठक के बीच का निकट का और स्वच्छ सम्बन्ध स्थापित करने की ही धारणा होने से मेरे पास ह्रदय खोलकर रख देने वाले पत्रों का ढेर लग जाता था | उसमें तीखे, कड़वे, मीठे यों भांति-भांति के पत्र मेरे नाम आते थे | यह सब मेरे लिए शिक्षा का उत्तम साधन बन गये थे | मुझे ऐसा मालूम हुआ मानो इसके द्वारा मैं समाज में चल रही चर्चाओं और विचारों को सुन रहा हूँ |'

<u>पत्रों से पत्रकारिता तक में सच्चाई का भाव :</u>

पत्रकारिता सच का ही आईना है और गांधी इस तथ्य से शत प्रतिशत वास्ता रखते थे | एक बार गांधी जी को एक गुजराती महिला ने गुजराती में पत्र लिखकर अपने अनुभवों के आधार पर सात सामाजिक दुर्भावों का ज़िक्र किया और कहा कि यदि प्रत्येक मनुष्य इन सात सामाजिक दुर्विचारों पर संयम कर ले तो वह एक सफल मानव बन सकता है | ये सात सामाजिक दुर्गुण हैं- 1) परिश्रम के बिना धन, 2) नैतिकता के बिना व्यवसाय, 3) विवेकहीन उपभोग व आनंद, 4) सिद्धांतहीन राजनीति, 5) चरित्र के बिना ज्ञान, 6) समर्पण के बिना धर्म और 7) मानवीय मूल्यों के बिना विज्ञान व विकास | पत्र में लिखी हुई इन सात बातों का गांधी जी के मन पर

विशेष असर हुआ और उस महिला को वापस पत्र लिखकर इस पर उन्होंने अपनी सहमती भी जताई | अवसर पड़ने पर एक बार अपनी लेखनी में गांधी जी ने उन सातों दुर्भावों का ज़िक्रा किया और साथ ही उस महिला का नामोल्लेख भी किया | गांधी अपना लेखन पूरा करने के बाद अंत में वहां अपना हस्ताक्षर कर देते थे | उसी प्रकार इस लेख के अंत में भी गांधी जी के हस्ताक्षर थे | अब जिसने भी यह लेख पढ़ा उसने इन सातों सामाजिक दुर्गुणों को गांधी जी द्वारा बताया गया ही माना, इस कारण आज भी ये सातों बातें गांधी जी द्वारा सुझाई गयी सात सामाजिक बुराइयों के बारे में प्रचारित हैं | किन्तु लेख लिखते समय इतने दिनों के बीत जाने के बाद भी गांधी ने किसी की बात को अपना कह कर पेश नहीं किया बल्कि उन्होंने सम्बन्धित व्यक्ति को यथास्थान उसका पूरा श्रेय दिया |

महिला सशक्तिकरण के विचारों को समाचार-पत्रों में स्थान

गांधी की लड़ाई समाज परिवर्तन की लड़ाई थी | जिसमें महिलाओं को भी उतना ही अधिकार दिया जाना शामिल था जितना कि पुरुष वर्ग को | गांधी का मानना था कि स्त्रियों की मुक्ति की शक्ति स्वयं उनमें ही है |

महिलाओं की क्षमता के विषय में गांधी का पूर्ण विशवास था कि जिस देश की आधी आबादी पूरी तरह सक्रिय नहीं होगी उस देश का पतन सुनिश्चित है | गांधी ने महिला उत्पीड़न और यौन शोषण पर भी अपने विचार पत्रकारिता को आधार बनाकर समाज के सामने खुले रूप में व्यक्त किये |

महात्मा गांधी के पास एक महिला का पत्र आया जिसमें उनसे कुछ सवाल पूछे गये थे | सवालों के विषय महिला उत्पीड़न और यौन शौषण जैसे गम्भीर मुद्दों पर आधारित थे | महिला के जो सवाल उस समय गांधी के समक्ष उपस्थित थे वह आज भी उतने ही गम्भीर रूप से हम-आप के बीच भी उपस्थित हैं और गांधी ने जिस बारीकी से इनका निदान प्रस्तुत किया था उनका आज के समय में उतने ही गम्भीर रूप से हमें अनुपालन करने की भी आवश्यकता है | महिला द्वारा पत्र के माध्यम से प्राप्त हुए समाज में होते महिला यौन उत्पीडन और शोषण के प्रश्नों का उत्तर यदि गांधी सिर्फ उस महिला को ही पत्र लिखकर दे देते तो इसका प्रभाव सीमित ही रह जाता | अत: गांधी की दूरदृष्टि और संचार माध्यमों की पहुँच और प्रभाव पर उनके विशवास ने गांधी को ऐसा करने के लिए परोक्ष रूप से प्रेरित किया तब ही गांधी के वे सभी पत्र आज हमारे सामने हैं जिनकी तासीर व्यक्तिगत होते हुए भी उनके लाभ सार्वभौमिक हैं |

गांधी जी के पत्रों का प्रभाव

गांधी जी संचार माध्यमों के प्रभाव को इतना बारीकी से समझते थे कि उन्हें अपने इस पूर्वाग्रह में कोई शक नहीं था कि यदि संचार कुशलता से कोई कार्य किया जाए तो जनमत को अपने पक्ष में किया जा सकता है | उन्हें किसी का समर्थन करना हो अथवा किसी के प्रति अपना विरोध जाताना हो, उनकी लेखनी स्पष्ट लिखती

थी | ना ही जिसे पत्र लिख रहे हैं उस के प्रभाव में आकर लेखन का प्रभाव नष्ट होता था और ना ही व्यक्तिगत हित-अहित के चलते वे अपने सत्यबोध से समझौता करते थे |

ज़िक्र कुछ ऐसा है कि, गांधी काठियावाड़ी पहनावा पहनते थे | बात तब की है जब वे दक्षिण अफ्रीका में वकालत कर रहे थे | वहां अश्वेत लोगों के प्रति भेदभाव चरम पर था | गांधी जी अपनी वकालत के जरिये अश्वेत लोगों को उनका अधिकार दिलाने का प्रयास कर रहे थे | एक बार जब गांधी जी वहां के कोर्ट में थे तो उन्हें पगड़ी के बिना वकालत करने के लिए कहा गया | उन्हें कहा गया कि वे अदालत में पगड़ी पहनकर अपने केस की कारवाई करने नहीं आ सकते | आदेशानुसार गांधी जी ने अपनी पगड़ी उतार दी और उन्होंने वह केस लड़ना जारी रखा |

ठीक अगले दिन गांधी जी ने डरबन के एक स्थानीय सम्पादक को इस सम्बन्ध में पत्र लिखा और कोर्ट में घटी पगड़ी उतारने वाली घटना पर अपना पूर्ण विरोध जताया | किसी न्यायलय के प्रति गांधी जी के विरोध का तरीका और पत्र में कही गयी बात के प्रभाव से सम्पादक ने विरोध स्वरुप लिखी गयी गांधी जी की उस चिट्ठी को ज्यों का त्यों अखबार में छाप दिया | यह पहली बार था कि किसी भी समाचार पत्र में गांधी का कोई लेख प्रकाशित हुआ था | गांधी जी का कहना था कि किसी भी राष्ट्र में ऐसा कानून नहीं हो सकता जो किसी की सांस्कृतिक स्वतंत्रता को नष्ट करता हो | डरबन के अखबार में प्रकाशित गांधी जी के इस पत्र का प्रभाव इतना हुआ कि पगड़ी पहनने पर प्रतिबन्ध लगाने वाले न्यायालय के कार्यवाहक को कड़ी आलोचना का सामना करना पड़ा |

अत: गांधी की दूरदृष्टि और संचार माध्यमों की पहुँच और प्रभाव पर उनके विशवास ने गांधी को ऐसा करने के लिए परोक्ष रूप से प्रेरित किया तब ही गांधी के वे सभी पत्र आज हमारे सामने हैं जिनकी तासीर व्यक्तिगत होते हुए भी उनके लाभ सार्वभौमिक हैं | बेशक गांधी जी का हस्तलेखन सुंदर नहीं था किन्तु उनकी लेखनी अत्यंत प्रभावी थी |

सन्दर्भ:

गांधी जी की पत्रकारिता (2023) गोविन्द सिंह. Newswriters.in

Mahatma Gandhi and Mass Media. Prof. V. S. Gupta. Retrieved from https://www.mkgandhi.org/mass_media.php

महात्मा गांधी की पत्रकारिता (कृपा शंकर चौबे), निबंध | https://www.hindisamay.com/content/12039/1/कृपाशंकर-चौबे-निबंध-महात्मा-गांधी-की-पत्रकारिता.cspx

गांधी, मो. के. (1957), सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा, अहमदाबाद, नवजीवन मुद्रणालय |

जैन, रमेश. (2010), पत्रकार गांधी | https://anuvadasampada.azimpremjiuniversity.edu.in/3743/1/पत्रकार%20गांधी.pdf